हज़रत अबुतालिब (अ0) की वफ़ात

आयतुल्लाह जाफ़र सुब्हानी मद्दज़िल्लहू
मुतरजिम : जनाब डाक्टर अख़तर महदी रिज़वी साहब

कुछ नेक अन्देश लोगों की फिक्री कोशिशों की नतीजे में कुरैश की इक़्तेसादी नाकाबन्दी का सिलसिला टूट गया और तीन साल की जिलावतनी व बेसरोसामानी के बाद पैग़म्बर (स0) और उनके वफादार साथी शेबे अबीतालिब से बाहर निकल कर अपने–अपने घरों की तरफ रवाना हो गये। मुसलमानों को ख़रीद व फरोख़्त की पूरी आज़ादी मिल गयी थी और उनके इक़्तेसादी हालात तक़रीबन सुधरने ही वाले थे कि अचानक पैग़म्बरे अकरम (स0) एक ऐसी ज़बरदस्त मुसीबत से दोचार हो गये जिसने बेसहारा मुसलमानों के जज़्बात को ग़ैर मामूली तौर पर मुतास्सिर कर दिया। इस हस्सास व पुरख़तर माहोल में इस हादसे ने मुसलमानों पर क्या असर क़ायम किया इसका अन्दाज़ा लगाना भी दुश्वार था क्योंकि किसी भी मकतबे फिक्र या तहरीक की नशोनुमा और कामियाबी में दो बुनियादी उन्सुर कारफरमा होते हैं यानि आज़ादीए बयान और दिफ़ाई ताक़त जो दुश्मन के बुज़दिलाना हरबों का मुक़ाबला कर सके। लेकिन यह अजब इत्तेफाक़ था कि जब मुसलमानों को अज़ादीए बयान की सहूलत हासिल हुई तो दूसरे बुनियादी उन्सुर के वजूद से महरूम हो गये यानि इस्लाम का तन्हा हामी व मुहाफिज़ उनके दरमियान से उठ गया।

उस वक़्त पैग़म्बर (स0) उस हामी व मुहाफिज़ से महरूम हो गये जिसने उनकी सरपरस्ती व हिफाज़त की ज़िम्मेदारी उस वक़्त क़बूल की थी जब वह सिर्फ आठ साल के थे उस वक़्त उनकी उम्र पचास साल हो चुकी थी। इस मुद्दत के दौरान यह मुहाफिज़ एक परवाने की तरह उनकी शमए हयात के इर्द–गिर्द रहा करता था। और जब तक ''मुहम्मद'' (स0) का कोई ज़रिय–ए–मआश न था यह उनकी किफालत भी करता और अपने बच्चों से ज़ियादा इनका ख़याल रखता था।

पैग़म्बरे अकरम (स0) ऐसी शख़सियत के वजूद से महरूम हो गये जिसको उनके जददे बुजुर्गवार अब्दुल मुत्तलिब ने उनका वली व वारिस क़रार दिया था और यूँ ख़िताब फरमाया था :

ऐ अब्दे मनाफ मैं उस शख़्स की हिफाज़त व सरपरस्ती की ज़िम्मेदारी तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ जो यक्तापरस्ती में तुम्हारे वालिद की तरह है। अब्दुल मुत्तलिब की बात का जवाब देते हुए अबुतालिब ने फरमाया : ''वालिदे मोहतरम! मुहम्मद (स0) के सिलसिले में किसी सिफारिश की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि वह मेरे फ़रज़न्द और मेरे भाई की निशानी हैं।''

(अबुतालिब का नाम अब्दे मनाफ था इसी वजह से उनके वालिद उन्हें इस नाम से मुख़ातिब करते हैं। यह भी कहा जाता है कि उनका नाम इमरान है जैसा कि ज़ियारत नामा में जिसको दूर से पढ़ना मुस्तहब है, पैग़म्बर (स0) को हम इस अन्दाज़ से मुख़ातिब करते हैं: अस्सलामु अला अमलि इमराने अबीतालिब। और बाज़ लोगों का ख़याल है कि अबुतालिब उनका नाम है कुनियत नहीं)

जब पैग़म्बरे अकरम ने अपने चचा की पेशानी पर मौत का पसीना देखा तो वह माज़ी के मुताल्लिक़ तल्ख़ व शीरीं हवादिस की याद में खो गये और अपने आप यह कहने लगे :

1– बिस्तरे मर्ग पर लेटा हुआ यह शख़्स मेरा वही मेहरबान चचा है जो इक़्तेसादी नाकाबन्दी के दौरान पहाड़ की वादी से रातों को मुझे मेरी ख़्वाबगाह से उठाता था और मुझे दूसरी जगह ले जा कर मेरे लिये हर मुमकिन आराम की सहूलत ख़्वाबगाह में फराहम किया करता था और अपने फरज़न्दे अज़ीज़ अली (अ0) को मेरी ख़्वाबगाह में सुला देता था ताकि अगर क़ुरैश अचानक हमला करके मेरे जिस्म को टुक्ड़े–टुक्ड़े करना चाहें तो उनका तीर सही निशाने पर न लग सके और उनका फरज़न्द अली (अ0) मेरी हिफाज़त में अपनी जान निछावर कर दे और जब एक रात उनके बेटे अली (अ0) ने उनसे कहा कि बाबाजान आख़िर कार एक रात में इसी बिस्तर पर क़त्ल कर डाला जाऊँगा। उन्होंने सख़्त लहजे में यह जवाब दिया।

मेरे बेटे! बुर्दबारी, दानिशमन्दी की अलामतों में से है। हर साहेबे हयात को मौत से हमकिनार होना पड़ेगा। मैं तुम्हारी बुर्दबारी आज़मा चुका हूँ और बलाएँ शदीद हैं और मैं तुमको फ़रज़न्दे नजीब की ज़िन्दगी के लिये कुर्बान कर चुका हूँ उनके बेटे अली (अ0) ने इन बातों का निहायत दिलकश जवाब देते हुए कहा : ''मैं पैग़म्बर (स0) की हिफाज़त की राह में आने वाली मौत को बाअिसे फ़ख्र समझता हूँ।

2–यह बे रूह जिस्म, मेरे इस गिराँक़द्र व वफादार चचा का जिस्म है जिसने मेरे मिशन की ख़ातिर तीन साल तक दरबदरी की ज़िन्दगी बसर की और अपने घर वालों का चैन व सुकून छीन लिया और उनके हुक्म की वजह से सब लोगों ने मेरे साथ पहाड़ की वादी में मसाएब आमेज़ ज़िन्दगी बसर की और उन्होंने अपनी सियादत व सदारत और सरदारी को लात मार दी यानि सारी दुनिया और अपनी हस्ती को बिलकुल फरामोश कर दिया और मुझे अपने साथ रखा और क़ुरैश के नाम निहायत सख़्त पैग़ाम इरसाल किया और उन लोगों पर पूरी तरह वाज़ेह कर दिया कि वह किसी भी क़ीमत पर मुझसे दस्तबरदार न होंगे। सरदाराने क़ुरैश के नाम उनके पैग़ाम का मतन यह है :

''ऐ दुश्मनाने मुहम्मद (स0)! यह मत सोचो कि हम लोग मुहम्मद (स0) से दस्तबरदार हो जायेंगे। ऐसा हरगिज़ मुमकिन नहीं। वह मुसाफेरत का आलम हो या ग़ैरे मुसाफेरत का वक़्त वह हम लोगों की नज़र में ग़ैर मामूली एहतेराम के हामिल हैं और ख़ानवादए हाशमी के ताक़तवर हाथ इनको हर नुक़सान व मसाएब से महफूज़ रखेंगे।''

चचा अबुतालिब की मौत की ख़बर फैल गयी और उनके घर से नाला व शेवन की आवाज़ बुलन्द होने लगी। दोस्त दुश्मन सभी उनके घर के इर्द–गिर्द जमा होने लगे ताकि मरासिमे तदफीन में शरीक हो सकें लेकिन क्या यह हो सकता है कि अबुतालिब जैसे सरदारे क़बीला की मौत का चर्चा इतनी जल्दी ख़त्म हो जाये।!

□□□